तृतीयः पाठः

Samuel Said



संख्यावाचिशब्दाः तद्-एतद्-शब्दौ च

कृष्णमूर्तिः श्रीकण्ठश्च मित्रे आस्ताम्। श्रीकण्ठस्य पिता समृद्धः आसीत्। अतः तस्य भवने सर्वविधानि सुख-साधनानि आसन्। तस्मिन् विशाले भवने

चत्वारिंशत् स्तम्भाः आसन्। तस्य अष्टादश-प्रकोष्ठेषु पञ्चाशत् गवाक्षाः, चतुश्चत्वारिंशत् द्वाराणि, षट्त्रिंशत् विद्युत्-व्यजनानि च आसन्। तत्र दश सेवकाः निरन्तरं कार्यं कुर्वन्ति स्म। परं कृष्णमूर्तेः माता पिता च निर्धनौ

कृषकदम्पती। तस्य गृहम् आडम्बरविहीनं साधारणञ्च आसीत्।



एकदा श्रीकण्ठः तेन सह प्रातः नववादने तस्य गृहम् अगच्छत्। तत्र कृष्णमूर्तिः तस्य माता पिता च स्वशक्त्या श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् अकुर्वन्। एतत् दृष्ट्वा श्रीकण्ठः अकथयत्– ''मित्र! अहं भवतां सत्कारेण सन्तुष्टोऽस्मि। केवलम् इदमेव मम दुःखं यत् तव गृहे एकोऽपि भृत्यः नास्ति। मम सत्काराय भवतां बहु कष्टं जातम्। मम गृहे तु बहवः कर्मकराः सन्ति।'' तदा कृष्णमूर्तिः अवदत्–''मित्र! ममापि अष्टो कर्मकराः सन्ति। ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे,

द्वे श्रोत्रे इति। एते प्रतिक्षणं मम सहायकाः। किन्तु तव भृत्याः सदैव सर्वत्र च उपस्थिताः भिवतुं न शक्नुवन्ति। त्वं तु स्वकार्याय भृत्याधीनः। यदा यदा ते अनुपस्थिताः, तदा तदा त्वं कष्टम् अनुभवसि। स्वावलम्बने तु सर्वदा सुखमेव, न कदापि कष्टं भवति।''

श्रीकण्ठः अवदत्-''मित्र! तव वचनानि श्रुत्वा मम मनिस महती प्रसन्नता जाता। अधुना अहमिप स्वकार्याणि स्वयमेव कर्तुम् इच्छामि।'' भवतु, सार्धद्वादशवादनिमदम्। साम्प्रतं गृहं चलािम।

🛶 शब्दार्थाः 🔶

| and and a second day | Bladde | and the second second second second | the little balance of a believed as |
|--|----------|-------------------------------------|--|
| समृद्धः | - 1 | धनी | rich |
| चत्वारिंशत् | - | चालीस | forty |
| अष्टादश | | अठारह | eighteen |
| प्रकोष्ठेषु | - | कमरों में | in the rooms |
| पञ्चाशत् | - | पचास | fifty |
| गवाक्षाः | - | खिड्कियाँ | windows |
| चतुश्चत्वारिंशत् | - | चवालीस | fortyfour |
| षट्त्रिंशत् | - | छत्तीस | thirtysix |
| कृषकदम्पती | - | किसान पति-पत्नी | farmer couple |
| आतिथ्यम् | - | अतिथि-सत्कार | respecting guests |
| कर्मकरः | - | काम करने वाला | worker |
| भवताम् | - | आपके | yours |
| भृत्यः | - | नौकर/सेवक | servant |
| शक्नुवन्ति | - | सकते हैं | able to do |
| The second secon | The same | The second second | The state of the s |

13

रुचिरा - द्वितीयो भागः

सार्धद्वादशवादनम् - साढ़े बारह बजे half past twelv साम्प्रतम् - अभी now



1. उच्चारणं कुरुत-

विंशति: त्रिंशत् चत्वारिंशत्

द्वाविंशतिः द्वात्रिंशत् द्विचत्वारिंशत्

चतुर्विंशतिः त्रयस्त्रिंशत् त्रयश्चत्वारिंशत्

पञ्चिवंशतिः चतुस्त्रिंशत् चतुश्चत्वारिंशत्

अष्टाविंशतिः अष्टात्रिंशत् सप्तचत्वारिंशत्

नवविंशतिः नवत्रिंशत् पञ्चाशत्

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

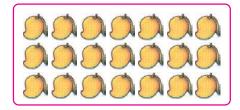
- (क) कस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्?
- (ख) कस्य गृहे कोऽपि भृत्यः नास्ति?
- (ग) श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् के अकुर्वन्?
- (घ) सर्वदा कुत्र सुखम्?
- (ङ) श्रीकण्ठ: कृष्णमूर्ते: गृहं कदा अगच्छत्?
- (च) कृष्णमूर्तेः कति कर्मकराः सन्ति?

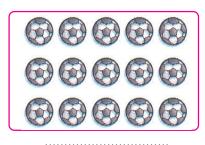
14

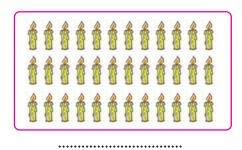
16 17 16 17 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18 19 18

3. चित्राणि गणयित्वा तदधः संख्यावाचकशब्दं लिखत-

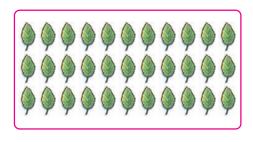








of of



4. मञ्जूषातः अङ्कानां कृते पदानि चिनुत-

चत्वारिंशत् सप्तविंशतिः एकत्रिंशत् पञ्चाशत् अष्टाविंशतिः त्रिंशत् चतुर्विंशतिः

28 27

| रुचिरा - द्वितीयो भागः | | | | | |
|------------------------|----|--------|--|--|--|
| 24 | 40 | •••••• | | | |
| 50 | | | | | |

5. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



| कृषका: | कृषकौ | एते | धान्यम् | एष: | कृषक: |
|---------|---|---|---------|---|----------|
| एतौ | क्षेत्रम् | कर्षति | कुरुत: | खननकार्यम् | रोपयन्ति |
| | | | | | |
| ******* | *************************************** | ••••• | ••••• | ••••• | ••••• |
| ****** | ••••• | • | ••••• | • | ••••• |
| | | | | | |

6. अधोलिखितान् समयवाचकान् अङ्कान् पदेषु लिखत-

| यथा- 10.30 | सार्धद्वादशवादनम् | 5.00 | ••••• |
|------------|---|-------|-------|
| 7.00 | *************************************** | 3.30 | ••••• |
| 2.30 | ••••• | 9.00 | ••••• |
| 11.00 | ••••• | 12.30 | ••••• |
| 4.30 | ••••• | 8.00 | ••••• |
| 1.30 | ••••• | 7.30 | ••••• |

16

2018-19 (2018-19) (2018-19

7. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

| षड् | त्रिंशत् | एकत्रिंशत् | द्वौ | द्वादश | अष्टाविंशति: |
|-----|-------------|--------------|------------|--------------|--------------|
| (क) | ••••• | ऋतवः भवन्ति। | | | |
| (ख) | मासा: ''''' | भवन्ति। | | | |
| (ग) | एकस्मिन् मा | से अथव | त्रा ····· | ····· दिवसा: | भवन्ति। |
| (ঘ) | फरवरी-मासे | सामान्यतः | ··· दिनानि | न भवन्ति। | |
| (퍟) | मम शरीरे " | हस्तौ स्त | `:I | | |

ध्यातव्यम्

